* महात्मा गाँधी के जीवन-चरित्र पर प्रकाश डालें।

अथवा

'बापू' कविता के आधार पर महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालें।

अथवा

'बापू' कविता के आधार पर महात्मा गाँधी के विचारों की विवेचना करें।

उत्तर ⇒ * भूमिका :-

भारतवर्ष संत महात्माओं की पवित्र भूमि है। जब-जब पृथ्वी पर पाप एवं अत्याचार बढ़े हैं, तब-तब ऐसे महान पुरुषों का अवतार हुआ है जिसको पाकर पृथ्वी अपने आप को धन्य समझती है। सतयुग में राजा हरिश्चंद्र, त्रेता में पुरुषोत्तम राम, द्वापर में कृष्ण और कलियुग में ईसा, बुद्ध, महावीर, मो. पैगम्बर हुए। इसी युग में भारतवर्ष में महान पुरुषों का पदार्पण भी हुआ, जिसमें से एक नाम महात्मा गाँधी का आता है।

हिंदी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल के किसी भी वाद में न बंधने वाले कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं जिन्हें राष्ट्रकवि भी कहते हैं। उन्होंने महात्मा गाँधी के विचारों को एवं व्यक्तित्व को 'बापू' कविता में उकेरा है। महात्मा गाँधी के विचारों को चित्रित किया है। उस समय की स्थिति और अभी की स्थिति में जो बदलाव आया है उसे दर्शाने का प्रयास किया और समाज को आदर्श रूप देने का प्रयास करते हैं।

14 THU 195-170 2022 JULY

SU MO TU WE TH FR SA
31 1 2
3 4 5 6 7 8 9
10 11 12 13 14 15 16
17 18 19 20 21 22 23
24 25 26 27 28 29 30

★ जीवन वृत्तांत —

महात्मा गाँधी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गाँधी है। इनका जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को गुजरात के पोरबन्दर में हुआ था। उनके व्यक्तित्व के सद्गुणों के कारण उन्हें महात्मा कहा गया। पिता करमचंद गाँधी और माता श्रीमती पुतली बाई गाँधी थी। गाँधी जी को सत्य-निष्ठा और ईमानदारी का संस्कार पिता से तथा धार्मिक संस्कार माता से प्राप्त हुआ। प्रारंभिक शिक्षा पोरबंदर से ही हुई और बाद में स्कूली शिक्षा राजकोट से हुई।

गाँधी जी का विवाह उनसे बड़ी उम्र की बालिका कस्तूरबा से तेरह वर्ष की आयु में ही सम्पन्न हुआ। उस समय अबोध रहने के कारण से विवाह समारोह, साज-सज्जा, रंग-बिरंगे वस्त्रों और खान-पान से खुश हुए थे परन्तु कालांतर में बहुत कष्ट अनुभव हुआ। गाँधी जी समाज सेवा और मानव सेवा का संकल्प लिया था। उन्होंने अंग्रेज सरकार के खिलाफ चल रहे बोअर-युद्ध में लड़ाई के मैदान में जाकर घायलों की सेवा की। आजादी की लड़ाई के क्रम में गाँधीजी ने 1930 में नमक आंदोलन किया, 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए विवश किया। इसी क्रम में 'करो या मरो' का नारा दिया। गाँधी जी तथा अन्य नेताओं के सहयोग से 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों ने भारत को स्वाधीन कर दिया। गाँधी जी ने हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच फैली हिंसा को रोकने के लिए नोआखाली की पैदल यात्रा की।

It always seems impossible until it's done. - Nelson Mandela

आखिर में वे 30 जनवरी 1948 ई. को बिड़ला भवन में नाथूराम गोड़से नामक युवक की गोलियों के शिकार हो गए।

★ गाँधी का चरित्र –

इनके चरित्र पर इनके विचार पूरी तरह से हावी हैं। इनके चरित्र में अनेक विशेषताएँ हैं जो इस प्रकार है –

(क) अंगार जैसी वीरता,
(ख) सत्य एवं अहिंसा के पुजारी,
(ग) शांति दूत,
(घ) युग-निर्माता,
(ङ) नभ मंडल से टकराना।

(क) अंगार जैसी वीरता :–

गाँधी के चरित्र में कहीं भी वीरता दिखाई नहीं पड़ती परंतु जब वह किसी आंदोलन की चर्चा करते हैं तो उनके हृदय की कठोरता एवं जिद्दीपन अंगार जैसी वीरता बनकर सामने आ खड़ी होती है। कवि शुरु ही पंक्ति में नमस्कारात्मक भाव से व्यक्त किया है –

संसार पूजता जिन्हें तिलक,
रोली, फूलों के हारों से,
मैं उन्हें पूजता आया हूँ,
बापू! अब तक अंगारों से।

Sanity and happiness are an impossible combination. - Mark Twain

SU	MO	TU	WE	TH	FR	SA
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

(ख) सत्य एवं अहिंसा के पुजारी :— गाँधी जी के विचारों में सत्य एवं अहिंसा की गंध उनके स्वभाव में ही दिखाई पड़ती है। उन्होंने सादा जीवन, उच्च विचार का आदर्श प्रस्तुत किए। वे सदा सत्य बोलना, अहिंसा को जीवन में उतारना / समाज में आदर्श स्थापित करना सिखाया। जो विचारधारा गौतम बुद्ध के समय कुंठित थी वह हमारे सामने प्रस्फुटित हुई गाँधी जी कृत कर्मों से।

(ग) शांति दूत :— जब भारत की जनता अंग्रेजों की बेड़ियों में जकड़ी थी तब स्वतंत्रता के लिए तड़प रही थी। ऐसी हालत में 1915 ई. को गाँधी जी दक्षिण-अफ्रीका से भारत आए। भारतवासियों के चेहरे पर निराशा और अशांति देखकर काफी दुखी हुए। भारत की जनता से जुड़ने के लिए आंदोलन शुरु किए और धीरे-धीरे पूरे भारतवर्ष में अपनी छवि बना ली। भारतीयों के जीवन में फैली निराशा और अशांति दूर कर एक नई उम्मीद का संचार का शांति की स्थापना की।

(घ) युग-निर्माता :— भले ही शिकागो सम्मेलन में विवेकानंद के दिए पवित्र भाषण से भारत की छवि विश्वभर में बनी परंतु उस छवि को बनाए रखने में महात्मा गाँधी की अहम भूमिका है। भारतवर्ष की सभी जनताओं को सम्बोधित कर सामंजस्य स्थापित किया। अलग-अलग व्यक्तियों के अलग-अलग सुझाव

और विचार होते हैं। इन विचारधारा वाले विभाग समूह को सँभालते हुए एक नए युग का सूत्रपात किया जिसे इतिहास की आधुनिक परंपरा में गाँधी-युग के नाम से जानते हैं।

(ङ.) नभ मण्डल से टकराना :-

भारत वर्ष में भारतीय एवं पाश्चात्य परंपराओं की अनेक विचारधाराएँ थी। सभी विचारधाराओं को मिलाकर गाँधी जी ने एक नई विचारधारा को जन्म दिया। जिसमें सभी विचारधाराओं का निचोड़ निकाला। जो सत्य और अहिंसा के मार्ग पर समाज के लोगों में सादा जीवन, उच्च विचार का आदर्श प्रस्तुत किया। वे सदा सत्य, अहिंसा, सेवा, ईमानदारी, त्याग, पवित्रता, करुणा और आध्यात्मिकता के पथ पर चलते रहे। और अपने साथ अन्य लोगों को भी प्रेरित किया। अन्य विचारों के विकट पल के साथ सामंजस्य स्थापित करना नभ मण्डल से टकराने के बराबर था।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार से कवि दिनकर ने 'बापू' कविता के माध्यम से उनके चरित्र, विचारधारा एवं सिद्धांतों को आज के समाज में स्थापित कर एक आदर्श समाज स्थापित करने का प्रयास किया है। साथ ही, उस समय समाज में क्या स्थिति थी और आज के समाज में क्या परिवर्तन हुआ है, उसे दिखाया है। साथ ही, गाँधी के चरित्र को समाज के हर व्यक्ति में स्थापित करना चाहते हैं।